ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /17

''प्राचीन भारत के प्रमुख शिक्षा केन्द्र नालन्दा का ऐतिहासिक महत्व''

डॉ0 ऋचा पाठक
असि0 प्रो0, प्राचीन इतिहास विभाग
का0सु0साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या।
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.137

सारांश

नालन्दा विश्वविद्यालय का प्रथम पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालय था। भारतीय संस्कृति के विलुप्त इतिहास की खोज में नालन्दा विश्वविद्यालय के पुरावशषौं का महत्वपूर्ण योगदान है। महायान बौद्ध धर्म के इस विश्वविद्यालय में ही तयान के साथ ही साथ अन्य धर्मों की शिक्षा दी जाती थी। चीनी यात्री ह्वेन सांग एवं इत्सिंग के यात्रा विवरणों से नालन्दा के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। कुनार गुप्त प्रथम द्वारा अपने 5वीं शताब्दी में नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर बख्तियार खिलजी के द्वारा विश्वविद्यालय तक नालन्दा विश्वविद्यालय देश–विदेश में अपनी कला एवं संस्कृति ज्ञान–विज्ञान, एवं सुन्दर एवं विशालकाय भवन के लिए भी प्रसिद्ध था, किन्तु आज यहाँ अवशेष ही बचे हैं। प्रारम्भ में बौद्ध शिक्षा, दर्शनशास्त्र, रसायनशास्त्र, शरीर–रचना विज्ञान और गणित के एक केन्द्र के रूप में स्थापित किये गये। इस आवासीय विश्वविद्यालय ने मध्य और पूर्वी एशिया के विभिन्न भागों जैसे–चीन, कोरिया, तिब्बत, मंगोलिया और तर्की के कई प्रसिद्ध विद्वानों और छात्रों को आकर्षित किया।

मूल शब्द :–महायान, ह्वेनसांग, इत्सिंग, शिक्षा केन्द्र पुरावशेष, पुस्तकालय, ऐतिहासिक महत्व

प्राचीन भारत के शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा विश्वविद्यालय का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय है। मूलतः यह एक बौद्ध बिहार था, जिसका विकास एक महान विश्वविद्यालय के रूप में हो गया। इस विश्वविद्यालय ने न केवल एशिया, अपितु दूर–दूर के छात्रों और विद्वानों को आकर्षित किया। नालन्दा विश्वविद्यालय न केवल बौद्ध अध्ययन और दर्शन के वरन् चिकित्सा और गणित बौद्ध अध्ययन केन्द्र के रूप में जाना जाता था।

7वीं शताब्दी में चीनी विद्यार्थियों, विशेष रूप से ह्वेनसांग ने नालन्दा का उच्च शैक्षणिक स्तर देखा और उन्हें जो विशेष रूप से पसंद आया उसके विषय में विस्तृत रूप से लिखा। ह्वेनसांग के विवरण से ही इसकी विशालता का पता चलता है। नालन्दा के संस्थापकों में गुप्त नरेशों की संख्या अधिक है। शक्रादिव्य संभवतः गुप्त सम्राट कुमार गुप्ता प्रथम ने (415–455ई0 इस सुविशाल बिहार की स्थापना की।[1] इसकी वृद्वि में गुप्त नरेशों का ही विशेष हाथ था।[2] नालन्दा की प्रारम्भिक स्थिति के बारे में यह ज्ञात होता है कि बुद्ध के प्रमुख शिष्य महात्मा बुद्ध के समय से ही थी। 500 श्रेष्टियों ने मिलकर 10 करोड़ मुद्राओं से नालंदा क्षेत्र को क्रय कर महात्मा बुद्ध को अर्पित किया था। महात्मा बुद्ध ने प्रावारिक नामक आम्रवन में कई दिन व्यतीत कर अपने शिष्यों को धर्म की शिक्षा दी थी। बाद में अशोक ने यहाँ एक विशाल बिहार का निर्माण कराया था। नालन्दा का विवरण जातकों में भी कहीं–कहीं मिलता है। महासुदस्सन जातक के अनुसार जिस गाँव में धर्म सेनापति सारि पुत्र का जन्म

तथा परिनिर्वाण हुआ उसे 'नालग्राम' कहा गया और जैन ग्रन्थों में राजगीर के सीमान्त क्षेत्रों नालन्दा का वर्णन किया गया है।

बिहार प्रान्त की राजधानी पटना के दक्षिण में लगभग 55 नील की दूरी पर आधुनिक बड़गाँव नामक ग्राम के समीप यह स्थित था। नालन्दा विश्वविद्यालय को एक शिक्षा केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित होने का सुअवसर 5वीं शता में प्राप्त हुआ। 5वीं शता0 में जब फाह्यान, भारत की यात्रा पर आया तब उसी ने नालन्दा को 'नालों– कहा। उस समय तक नालन्दा विश्वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध नहीं हुआ था, क्योंकि इसका उल्लेख फाह्यान ने कहीं नहीं किया है। फाह्यान के बाद ह्वेनसांग लगभग तीन शता0 नालन्दा आया तब तक नालन्दा एक विश्वविद्यालय के रूप में विख्यात हो चुका था। ह्वेनसांग ने नालन्दा में रहकर पाँच वर्षो तक (635–640ई0) तक अध्ययन किया। अनन्त सदाशिव अल्तेकर का अनुमान है गुप्त सम्राट कुमार गुप्त ने इस विश्वविद्यालय की आधार शिला रखी थी।[3] ह्वेनसांग के अनुसार बुद्ध गुप्त ने इस विश्वविद्यालय में एक मठ का निर्माण करवया था।[4] इसके बाद तथागत गुप्त[5], बालदित्य[6], वज्र तथा हर्ष[7] ने नालन्दा में महाबिहार बनवाने एवं संचालक हेतु आर्थिक सहायता भी प्रदान की।

नालन्दा विश्वविद्यालय के अवशेषों के उत्खनन से ज्ञात होता है कि नालंदा विश्वविद्यालय कम से कम एवं मील लम्बा और आधा मील चौड़ा था इसका सिर्फ एक द्वार दक्षिण दिशा में था। इस विश्वविद्यालय के भिक्षु आवासों एवं स्तूपों का निर्माण एक सुनियोजित वास्तु योजना के अन्तर्गत निर्मित था। मुख्य दरवाजा मुख्य महाविद्यालय के सामने खुलता था। यहाँ षड़तलीय मठों का निर्माण कराया कराया गया था। जहाँ दस हजार विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों के आवास की व्यवस्था थी।[8]

विश्वविद्यालय में व्याख्यान के लिए 8 बड़े कक्ष तथा 300 छोटे कमरे बने हुए थे। नालन्दा के भवन भव्य, उतुंग तथा बहुमंजिले थे। व्ही–ली ने यहाँ के भवनों का अत्यन्त रोचक विवरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि 'सम्पूर्ण संस्थान ईंटों की दीवार से घिरा हुआ है जो कि पूरे मठ को बाहर से घेरती है। एक द्वार विद्यापीठ की ओर है जिसमें अन्य हाल जो बीच में स्थित हैं, अलग किये गये हैं प्रचुर रूप से अलंकृत मीनारें तथा परियों के समान गुम्बज, पर्वत की नुकीली चोटियों की तरह परस्पर हिले–मिले से खड़े हैं। बाहर की सभी कक्षायें जिसमें श्रवण आवास हैं चार–चार मंहिली हैं।[9] यशोवर्मन के नालन्दा–लेख से ज्ञात होता है कि नालन्दा में ऊँचे–ऊँचे मंदिर और बिहार वर्तमान थे जो बादलों को छूटे दिखाई पड़ते थे।[10] यह उपनिवेश एक बृहत–प्राचीर से परिवेष्ठित था जिसमें दक्षिण ओर द्वार वर्तमान था।[11]

नालन्दा विश्वविद्यालय में 'रत्नसागर' 'रत्नोरधि' तथा रत्नरंजक' नामक तीन विशाल भवनों से मिलकर भव्य पुस्तकालय का निर्माण हुआ था।[12] पुस्तकालय के इस भाग को 'धर्मगंज' कहा जाता था। इसमें ग्रन्थों का विशाल संग्रह तथा पांडुलिपियां सुरक्षित थीं। अपने समय में विश्व में बौद्ध और हिन्दू साहित्य का सबसे बड़ा संग्रह था।

ह्वेनसांग के कथनानुसार नालन्दा की प्रवेश परीक्षा इतनी कठिन थी कि दस में से दो या तीन परीक्षार्थी ही उसमे सफल हो पाते थे।[13] तथा प्रवेश परीक्षा दूर से आये विद्यार्थियों की ही ली जाती थी। यह प्रवेश परीक्षा विश्वविद्यालय के द्वारपाल द्वारा मौखिक रूप से ली जाती थी। द्वारपाल प्रथम साक्षात्कार में ही विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का आकंलन कर लेते थे। इस प्रवेश परीक्षा से विश्वविद्यालय की शैक्षणिक स्तर का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। ह्वेन सांग का कथन है कि नालंदा में प्रवेश पाना और वहां का स्नातक होना गौरव की बात समझी जाती थी।[14]

यहां के विद्यार्थियों की संख्या तत्कालीन विश्व के शिक्षा केन्द्रों से अत्याधिक थी। इत्सिंग[15] के भारत यात्रा के समय यहाँ के विद्यार्थियों की संख्या 3000 थी। परन्तु ह्वेनसांग के समय इनकी संख्या 10,000 हो गई थी।[16] ह्वेनसांग, इत्सिंग, थान–मी, ही–निएह, ताऊसिंग आदि प्रति विद्यार्थियों ने यहां पर छात्र रूप में अध्ययन किया तथा पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि तैयार की। नालन्दा का समग्र शिक्षण प्रतिरूप, जो जीवंत वाद–विवाद व संवाद पर आधारित था, उसने व्यक्तिगत मानव जीवन और वृहत जीवमंडल के बीच एक संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया।

नालन्दा विश्वविद्यालय जितना प्रसिद्ध अपने शिक्षण व्यवस्था के लिए था इससे कहीं ज्यादा प्रसिद्ध अपने विद्वान आचार्यों के लिए था। ह्वेनसांग के समय शीलभद्र ही विश्वविद्यालय के कुलपति थे। वे सभी विषयों के प्रकाण्ड पण्डित थे। उसने स्वयं शीलभद्र के चरणों में बैठकर अध्ययन किया था।[17] यहां के अन्य विद्वानों में धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुणमर्ति, स्थिरमति, प्रभामित्र जिनमित्र, ज्ञानचन्द्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन सभी की ख्याति दूर–दूर तक फैली हुई थी। यहां शिक्षकों की संख्या लगभग 1500 थी, जिनमें 1000 प्राध्यापक तीस सूत्र निकायों में दक्ष थे और शेष 500 अन्य विषयों में। ह्वेनसांग भी यहां के शिक्षकों में था जिसने अनेकोनेर विषयों पर अधिकार प्राप्त किया था।

यद्यपि नालन्दा, महायान बौद्धधर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था तथापित यहाँ अनेकों विषयों की शिक्षा भी समुचित रूप से प्रदान की जाती थी। पाठ्यक्रम में महायान तथा बौद्धधर्म के अठारह सम्प्रदायों के ग्रन्थों के अतिरिक्त वेद, हेतु विद्या, शब्दविद्या, योगशास्त्र चिकित्सा तंत्रविद्या, सांख्यदर्शन के ग्रन्थों आदि की शिक्षा व्याख्यानों के माध्यम से दी जाती थी। युवानच्वांग के अनुसार बच्चों की शिक्षा सिद्धमचंग से प्रारम्भ होती थी। बौद्ध विद्यार्थी साधारणतः अपने–अपने सम्प्रदाय से सम्बन्धित साहित्य में ही विशेष योग्यता प्राप्त करते थे। युवानच्वांग का कथन है कि प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान गुणभद्र ने पंचविद्याओं के अतिरिक्त ज्योतिष, गणित, चिकित्साशास्त्र में भी दक्षता प्राप्त की थी।[19] इत्सिग के विवरण से ज्ञात होता है कि नालन्दा में शिक्षा के दो स्तर थे। पहले स्तर में प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत सर्वप्रथम व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी। दूसरे स्तर में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत शास्त्रार्थ विधि से शिक्षकों द्वारा ज्ञान अर्जन कराया जाता था।[20]

नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन की पद्धति मौखिक तथा पुस्तक की व्याख्या, व्याख्यान, शास्त्रार्थ, एवं वाद–विवाद की सुचारू व्यवस्था थी। इस प्रकार नालन्दा विश्वविद्यालय की शिक्षा पद्धति त्रिस्तरीय थी। प्रथम स्तर के अन्तर्गत मौखिक शिक्षा की व्यवस्था थी जिसमें विद्यार्थियों को पाठ दिया जाता था। छात्र उनकी व्याख्या सहित अध्ययन करके अध्यापक को सुनाते थे। द्वितीय पद्धति में व्याख्यान विधि को सम्मिलित किया गया था।[21] तृतीय स्तर शास्त्रार्थ विधि थी। शिक्षा की एक दूसरी पद्धति प्रचलित थी जिसको ''औपध्यापिक'' शिक्षा'' कहा गया है। जिसमें शिष्य, गुरू की सेवा द्वारा प्राप्त करता था।[22] नालन्दा के विद्यार्थी, गुरू की सेवा श्रद्धा भाव से करते थे तथा गुरू अपने शिष्यों की नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपने को उत्तरदायी समझता था।

नालन्दा विश्वविद्यालय में किसी भी प्रकार का शिक्षण शुल्क विद्यार्थी से नहीं लिया जाता था। विद्यार्थियों के आवास, वस्त्र, भोजन और औषधि की निःशुल्क व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जाती थी। इत्सिंग के अनुसार नालन्दा के आचार्य एवं विद्यार्थी दोनों को एक ही प्रकार का भोजन दिया जाता था। तत्कालीन विश्व में नालन्दा की एक ऐसा विश्वविद्यालय था जहाँ निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था थी। ह्वेनसांग ने विद्यार्थियों के ज्ञान की श्रेष्ठता का मुख्य कारण यह बताया कि छात्र विद्याध्ययन के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करते थे। इस निश्चितता के कारण छात्र अपने अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में सफल रहते थे। निर्धनता के कारण किसी भी छात्र को शिक्षा से

वंचित नहीं किया जाता था परन्तु छात्र को अनिवार्य रूप से प्रवेश परीक्षा में मुख्य रूप से उत्तीण होना आवश्यक था।

नालंदा की उत्तर जीविका मुख्य रूप से आस–पास के गाँवों के दान के रूप में मिले उत्पाद और राजस्व के माध्यम से और राजकीय संरक्षण से चलती थी। जिससे विद्वानों को अपने जीवनयापन के विषय में चिंचित नही होना पड़ता था।

विश्वविद्यालय का प्रबन्ध मुख्य रूप से कुलपति द्वारा किया जाता था। अध्यक्ष अथवा कुलपति का चुनाव समस्त भिक्षुओं द्वारा किया जाता था। इस पद कि लिए सम्मानित भिक्षु ही योग्य समझे जाते थे। सम्पूर्ण प्रबन्ध के लिए दो सभाओं का गठन किया गया था जो कुलपति या अध्यक्ष को परामर्श देती थी। पहली समिति शिक्षा सम्बन्धी समस्त कार्यों में अध्यक्ष को उचित सलाह देती थी जैसे–शिक्षा से सम्बन्धित विषयों प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम, शिक्षकों के अध्यापन का विषय तथा पुस्तकालय से सम्बन्धित कार्य। (24)

द्वितीय समिति विश्वविद्यालय की प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित थी। नये भवनों का निर्माण, पुराने की मरम्मत, भोजन, वस्तु संघ सम्बन्धी सामान्य कार्यो की व्यवस्था आदि के लिए यह सभा उत्तरदायी होती थी। ह्वेनसांग की जीवनी के अनुसार हर्ष ने बिहार के भरण पोषण के लिए 100 गाँवों की मालगुजारी जागीर में दे रखी थी। इन गाँवों के 200 गृहस्थ प्रतिदिन कई सौ पिकल (1 पिकल = 60किग्रा) चावल और कई सौ कट्टी (एक कट्टी = 70 किग्रा) मक्खन दिया करते थे। इन गाँवों की देख–रेख, उनकी उपज की व्यवस्था करना भी दूसरी समिति का कार्य था।

छात्रों के भी अपने संघ थे। अपराधी छात्रों के दण्ड की व्यवस्था विद्यार्थियों के संघों द्वारा होती थी।(25) स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ था तथा इसके आय–व्यय का प्रबन्ध जनतान्त्रिक पद्धति से होता था।(26)

इस प्रकार नालंदा एक अद्भुत निराला एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय था। हर्ष के बाद लीगभग 12वीं शता0 तक इसकी ख्याति बनी रही मन्दसोर प्रस्तर लेख (8वीं शताब्दी) से ज्ञात होता है कि सभी नगरों में नालन्दा अपने विद्वानों के कारण सबसे अधिक ख्याति प्राप्त किये हुए था। 9वीं शताब्दी में भी नालन्दा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त किये हुए था। परन्तु 11वीं शताब्दी से पाल शासकों ने विक्रमशिला को राजकीय संरक्षण देना प्रारम्भ कर दिया जिससे नालन्दा का महत्व घटने लगा। अन्ततः 12वीं शताब्दी के अन्त में मुस्लिम आक्रमण्कारी मुहम्मद–बिन–बख्तियार खिलजी ने इस विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया। यहाँ के भिक्षुओं की हत्या कर दी गयी। तथा विश्वविद्यालय को आग लगा दी।(27) 1193ई0 में तुर्क आक्रमणकारी के हमले के पश्चात् यहाँ का पुस्तकालय 06 माह तक जलता रहा। इस प्रकार एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षा केन्द्र का दुःखद अन्त हुआ।

12वीं सदी में नालंदा का पतन, उच्च शिक्षा की सबसे ज्यादा समय तक जीवित रहने वाली संस्था के अंत के रूप में चिन्हित है, जो कि वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय था और अपने समय में ज्ञान उत्पत्ति और प्रसार में शीर्ष और अद्वितीय स्थान रखता है।

वर्तमान समय में भारत सरकार जिस प्रकार से व्यक्तिगत विश्वविद्यालय खोलने की छूट दे रही है, तथा विदेशी राष्ट्रों को इसके लिए अनुदान देने के लिए आमंत्रित कर रही है मालूम पड़ता है कि प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय से एहिहासिक शिक्षा ली गई है।

संदर्भ–सूची

1. वासुदेव उपाध्याय का लेख, नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग 15 अंक–2
2. वाटर्स ह्वेन सांग, भाग–1, पृ0–289
3. अल्तेकर, डॉ0 ए0एस0 एजुकेशन इन एंशियंट इंडिया, नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी 1957
4. वाटर्स, टी आन युवान–च्वांग ट्रेवेल्स इन इंडिया, पृष्ठ–110–111, वाल्यूम–1 एण्ड–2 लंदन।
5. आर्कियोलॉजिक्ल सर्वे ऑफ इंडिया, एनुवल रिपोर्ट 1921–22
6. पाठक, विशुदानन्द, 5वीं–7वीं शताब्दियों का भारत, इलाहाबाद 1990, पृष्ठ–122
7. श्रीवास्तव, ए0पी0 नालन्दा की स्थापत्य एवं मूर्तिकला, दिल्ली 1994, पृ0–14
8. इपिग्राफिक, इण्डिका, भाग–8, पृष्ठ–310
9. लाइफ ऑफ हुएनसांग, पृष्ठ–111–112
10. एपिग्राफी इंडिका, 20 पृष्ठ–43
11. बील, लाइफ ऑफ ह्वेनसांग पृष्ठ–109 वार्टस, भाग–2 पृष्ठ–164–171
12. चौबे, सरयू प्रसाद, आदि और मध्य युगीन रिलीजन पृष्ठ–14
13. वाटर्स थामस, आन भुवान, च्वांग्स टवेल्स इन इंडिया, पृष्ठ–165 मिश्रा वी.एन. नालन्दा, भाग–1 पृष्ठ–240
14. पणिक्कर, के0एम0ए0 सर्वे ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, पृष्ठ–26 एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई।
15. बील, लाइफ ऑफ ह्वेनसांग पृष्ठ–110–111
16. इत्सिंग, पृष्ठ–154
17. वाटर्स, टी0 पूर्वोद्धृत
18. वाटर्स, टी0, वाल्यूम–1, पृष्ठ–155
19. वाटर्स, टी0, वाल्यूम–1, पृष्ठ–158
20. शास्त्री, चतुरसेन, बुद्ध और बौद्ध धर्म, पृ0–299
21. बापट, पी0बी0, वही पृष्ठ–135
22. समद्दर, ग्लोरीज ऑफ मगध, पृष्ठ–138
23. इत्सिंग का रिकार्ड ऑफ दि बुद्धिष्ट रिजीजन पृष्ठ–116
24. जीवनी, पृष्ठ–112–113
25. चौबे, सरयू प्रसाद, आदि और मध्य युगीन रिलीजन पृष्ठ–129
26. श्रीवास्तव, ए0पी0 नालन्दा की स्थापत्य एवं मूर्तिकला, दिल्ली 1994, पृ0–14
27. मिनहाज, तवलात–ए–नासिरी, अनु–एच, जी0 रेवर्टी, कलकत्ता 1881, पृष्ठ–552 इलिएट, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, अंक–2 306